स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
द्वितीय सेमेस्टर

6 April 2020

उर मे माखनचोर गड़े।
अब कैसेहु निकसत नाहि ऊधो! तिरछे ह्वै जु अड़े॥
जदपि अहीर जसोदानंदन तदपि न जात छँड़े।
वहाँ बने जदुबंस महाकुल हमहिं न लगत बड़े॥
को बसुदेव, देवकी है को, ना जानैं औ बूझैं।
सूर स्याम सुन्दर बिनु देखे और न कोऊ सूझैं॥35॥

व्याख्या :- विद्यार्थियों आप देख रहे हैं कि वचन में चातुर्य से, वचन वक्रता से गोपियाँ उद्धव को अपनी बात समझाने का प्रयास कर रही है। उद्धव के तरह-तरह के तर्कों के प्रत्युत्तर में गोपियाँ यहाँ अपनी असमर्थता व्यक्त कर रही है। प्रत्यक्षतः सीधे शब्दों में गोपियाँ अपनी गूढ़ात्मक अभिप्राय, कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति, अपना अनन्य प्रेम को दर्शाने का प्रयास कर रही है। गोपियाँ सीधे शब्दों में कहती है कि माखन चुराने वाले हमारे कृष्ण मेरे हृदय में गहरे पैठ गये है, वे तो अंतरतम तक गड़े हुए हैं। आप चाहे लाख प्रयास कर लें, लाख तरह से अब

निर्गुन का व्याख्यान करें, प्रयास कर लें गोपियाँ
कृष्ण को हृदय से नहीं निकाल सकती हैं। उनका
कहना है कि हम लोगों के सीधे-सादे हृदय में वह
कृष्ण तिरछे होकर अटक गया है। इस तिरछे
शब्द में गोपियों की वचन वक्रता का पता चलता है
तिरछे शब्द का अभिप्राय है श्री कृष्ण की त्रिभंगी
मुद्रा। त्रिभंगी का अभिप्राय यह है कि जब वे
हमलोगों से रास रचाते हुए बाँसुरी बजाते थे तो
उनका सम्पूर्ण शरीर तीन स्थानों से मुड़ा रहता
था। बाँसुरी बजाते हुए उनकी गर्दन मुड़ी रहती थी
उनकी कमर भी एक ओर झुकी रहती थी और
घुटने भी अर्ध मोड़ लिए हुए रहते थे। यह कहने
का तात्पर्य यह कि सीधी वस्तु में कोई टेढ़ी
वस्तु अगर घुस जाय तो उसे निकालना तो
मुश्किल होता ही है पर अगर कोई तीन जगह से
मुड़ी हो वस्तु सीधी वस्तु में अटक जाय तो
उसे निकालना सबका मुश्किल है।

14 MAY.

गोपियों को भरमाने के लिए उद्धव जी कहते हैं कि वह कोई बड़ा आदमी नहीं है वह तो एक साधारण अहीर है, एक यादव है तथापि उन्हें भुलाना सम्भव नहीं है। चाहे वे यादवों के राजा बन गये हों, बहुत महान हो गये हों पर हैं तो मेरे घरों से माखन चुराने वाले ही, इतने अपने और इतने प्रिय हैं कि उन्हें निकालना सम्भव ही नहीं है। दुनिया उन्हें चाहे जितना बड़ा, जितना महान समझे हमलोगों के तो अपने ही हैं, कैसे उन्हें अपने से अलग समझ लूँ। लोग कहते हैं कि हमारे प्रियतम श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव हैं और माता देवकी हैं, परंतु हमलोग तो उन्हें नन्दनन्दन और यशोदा माता का पुत्र ही मानते हैं। यह कैसी पहेली है मैं इसे समझना और इसकी तह तक जाना नहीं चाहती हैं। हमलोगों को कोई बुझौअल नहीं बुझाइए।

अंततः गोपियाँ निर्णयात्मक शब्दों में कहती हैं कि आप चाहे कोई सिद्धांत बघार लें, 2014. किसी तरीके से समझाने का प्रयास करें हमलोग।।

26 SATURDAY APRIL

MAR 14

५

पर कोई असर नहीं पड़ने वाला है। अगर हमलोग
के लिए कुछ कर सकते हैं तो हमें श्रीश्यामसुन्दर के
दर्शन करवा दें क्योंकि बिना उनके दर्शन किए
हमलोगों को चैन पड़ने वाला नहीं है। अब हम
आँख देखने का प्रयास कर लें पर दूसरा और कोई
सूझता ही नहीं है। हमलोग देखेंगे तो माखन
श्रीकृष्ण को ही, उनकी त्रिभंगी मुद्रा को ही
अन्यथा हमारी आँखें अंधी हो जायें, कुछ
दूसरे नहीं सूझे, कोई भी दिखाई नहीं दे।

निष्कर्षात्मक रूप में हम यही कह सकते हैं
कि गोपियाँ श्रीकृष्ण की अनन्य प्रेमिका थीं।

27 SUNDAY

कुमार रजनीकान्त रंजन
६।५।२०२०